टीचर्स ऑफ़ बिहार (द चेंज मेकर्स)

गद्य गुंजन

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित गद्य का संकलन

अंक : 2 । अप्रैल-जून । त्रैमासिक पत्रिका । 2025-2026

पर्यावरण विशेषांक

टीचर्स ऑफ़ बिहार (द चेंज मेकर्स)
द्वारा निर्गत ई-पत्रिका

"देर-सवेर हमें यह स्वीकार करना ही होगा कि पृथ्वी को भी प्रदूषण के बिना जीने का अधिकार है। मनुष्य को यह जानना चाहिए कि मनुष्य धरती माता के बिना नहीं रह सकता, लेकिन ग्रह मनुष्यों के बिना रह सकता है।"

- इवो मोरालेस

वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

शुभकामना संदेश

शिक्षण एक सृजनशील वृत्ति है जिसमें कक्षा के अन्दर हो या बाहर, हर शिक्षक अपने चिंतन से कुछ सार्थक निर्मित कर रहा होता है। विद्यालय में एक सृजनशील शिक्षक से ही सृजनात्मक गतिविधियों को बल मिलता है और जब बात पर्यावरण संरक्षण की हो तो उसे रोचक शिक्षणविधियों एवं सामग्रियों के माध्यम से बच्चों को समझाने में बिहार के शिक्षकों की अपनी विशिष्ट सृजनशीलता है। 'टीचर्स ऑफ़ बिहार' की यह 'गद्य गुंजन' त्रैमासिक पत्रिका, उसी सृजनशीलता की एक अनूठी मिसाल है, जिसके पर्यावरण विशेषांक में शिक्षकों के चयनित विचारों, अनुभवों और उत्साही गतिविधियों से सम्बंधित आलेखों को प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं उन सभी शिक्षकों को बधाई देता हूँ जिनकी रोचक रचनाओं से यह अंक सुशोभित हो रहा है। साथ ही, संपादन मंडल का भी अभिनन्दन करता हूँ जिनके अथक प्रयास से इतनी सुन्दर डिजाईन और ज्ञान सामग्री से परिपूर्ण 'गद्य गुंजन' पत्रिका प्रकाशित हो रही है। सभी पाठकों के लिए इस अंक को पढ़ना बहुत ही मनोरम होने वाला है। यह पत्रिका हमारे छात्रों, शिक्षकों और अन्य पाठकों की सृजनात्मकता को निरंतर संवारती रहे, ऐसी कामना करता हूँ।

शुभकामनाएं

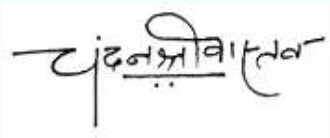

चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

शुभकामना संदेश

भारतीय दर्शन में जीव और प्रकृति के बीच अन्योन्याश्रय का सम्बन्ध बताया गया है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक रूप पोषक दोनों माने गये हैं जो अन्ततः एक परम शक्ति के प्रतिबिंब के रूप में व्याप्त हैं। इसीलिए, हमारे यहाँ प्रकृति पूज्य है। हम प्रकृति के दोहन और शोषण में विश्वास नहीं करते हैं। हमारी सभी सनातनी परम्पराएँ इस बात की गवाह हैं।

पश्चिम के प्रभाव में बढ़ते विकासवाद और भौतिकवाद के चलते विश्व में प्रकृति और पर्यावरण के साथ काफ़ी छेड़-छाड़ हुआ है। परिणामस्वरूप आज प्रदूषण, जैव विविधता पर संकट एवं जलवायु में बदलाव का संकट मानव एवं जीवों के अस्तित्व पर संकट ला खड़ा किया है। ये संकट सदी के सबसे बड़े संकटों में एक माना जा रहा है।

इन्हें दूर करने के लिए बहस, चर्चा, सम्मेलन आदि के अतिरिक्त व्यक्तिगत एवं संस्थागत स्तर पर भी बहुत कुछ करने की ज़रूरत है। मसलन पेड़-पौधों की संरक्षण, उन्हें लगाना और उनकी देखभाल करना अनेक उपायों में से एक बड़ा उपाय है। अपने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का 'एक पेड़ माँ के नाम' का ध्येय सन्देश इस दिशा में हम सभी के लिए एक बड़ी प्रेरणा है।

इस जागरूकता को बढ़ाने के लिए स्कूल से बड़ा कोई और ध्वजवाहक भी नहीं हो सकता और शिक्षक से बड़ा कोई संदेशवाहक नहीं। मुझे बहुत खुशी एवं गर्व हो रहा है कि 'गद्य गुंजन' का यह अंक पर्यावरण संरक्षण को समर्पित है। मेरी तरफ़ से इसे अनेक अनेक शुभकामना है।

प्रो. सुभाष चंद्र रॉय
विभागाध्यक्ष एवं डीन
एनईआरई, एनसीईआरटी, शिलांग

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

'गद्य गुंजन' का यह दूसरा अंक एक विशेष उद्देश्य “पर्यावरण विशेषांक" के साथ प्रस्तुत है। आज जब हम भौतिक प्रगति की दौड़ में प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं तब साहित्य का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वह हमें हमारी जड़ों की याद दिलाए। साहित्य का कार्य ही समाज में व्याप्त उन मुद्दों को उठाना है जो कहीं न कहीं हमारे जीवन को प्रभावित करता है। इस अंक में हमने वर्तमान समय के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक ‘पर्यावरण संरक्षण' जैसे विषय पर रचनाओं को स्थान दिया है। यह उन पेड़ों, नदियों, पशु-पक्षियों और धरती माता को समर्पित है जिसकी पीड़ा अब चीख बन चुकी है। इस विशेषांक में दस शिक्षक/शिक्षिका रचनाकारों द्वारा पर्यावरण को लेकर साहित्यिक संवेदना को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। गद्य के विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रकृति का बिंबों, दृश्यों उकेरा गया है साथ ही संदेशपरक रचनाओं को भी शामिल किया गया है।

पर्यावरण कोई बाहरी विषय नहीं है, यह हमारे जीवन की मूलभूत शर्त है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई और जैव विविधता की क्षति- ये अब साहित्यिक विषय मात्र नहीं, हमारे अस्तित्व के प्रश्न बन चुके हैं। आज के लेखक जब इन प्रश्नों पर विचार करते हैं तो वह केवल सृजन मात्र नहीं बल्कि एक चेतावनी भी है।

इस अंक में कई वरिष्ठ और नवोदित लेखकों ने अपने विचारों, अनुभवों और रचनात्मक दृष्टिकोण से पर्यावरण विषय को संवेदनशीलता के साथ छुआ है। लेखों में जहाँ कहीं आँकड़ों का तथ्य है, वहीं कल्पनाशक्ति के रंग भी हैं। इस अंक की विशेषता यह भी है कि इसमें हमने हिंदी के सुप्रसिद्ध रचनाकार, साहित्यिक पत्रकारिता और सामाजिक चेतना के अग्रदूत एवं हिन्दी गद्य साहित्य के स्वरूप को सुदृढ़ करने वाले स्व. बालकृष्ण भट्ट (जयंती विशेष) की एक रचना को भी शामिल करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रयास किया है। उनकी रचना के माध्यम से हम यह समझ पाते हैं कि लेखनी केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक बदलाव का औजार है।

हम आशा करते हैं कि यह विशेषांक न केवल आपको एक पाठकीय अनुभव देगा बल्कि पर्यावरण के प्रति सजग और उत्तरदायी बनाएगा।

आपके सुझाव, प्रतिक्रियाएँ और आलोचनाएँ हमें अगली यात्राओं में अधिक समृद्ध बनाएँगी। आइए, हम सब मिलकर इस पृथ्वी को बचाने की दिशा में साहित्यिक दीप जलाएँ।

आस्था दीपाली
शिक्षिका,
राजकीयकृत उच्च माध्यमिक (+2) विद्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार

~ गद्य गुंजन ~

अंक : 2 । त्रैमासिक पत्रिका । 2025-2026

प्रधान संपादक

देव कांत मिश्रा
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुल्तानगंज, भागलपुर

संपादन एवं डिज़ाइन

आस्था दीपाली
रा० कृत उ० मा० (+2)
विद्यालय, कुढ़नी, मुज़फ़्फ़रपुर

पाठ शोधक

सुबोध कुमार द्विवेदी
एन.पी.एस घोरगहिया,
दुसाधपट्टी, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय,
नारायणपुर, बिक्रम, पटना

महत्वपूर्ण

- गद्य गुंजन त्रैमासिक पत्रिका है जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इस संग्रह में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कहानियाँ संकलित है।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पत्रिका के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य माध्यम से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पत्रिका का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- इसमें प्रकाशित कहानियाँ 'टीचर्स ऑफ़ बिहार' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।
- इसमें प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक/रचनाकारों के निजी है।

इस अंक में...

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	पर्यावरणीय चुनौतियां और हम - आशीष अंबर	11
2	फूल और पर्यावरण - रुचिका	12
3	रूपा ने पेड़ लगाई, स्वच्छ पर्यावरण पाई - नीतू रानी	13
4	पर्यावरण संरक्षण: हमारा कर्त्तव्य - नूतन कुमारी	14
5	वृक्षारोपण-वृक्षसंरक्षण - गिरीन्द्र मोहन झा	16
6	हम और हमारा पर्यावरण - डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	18
7	प्लास्टिक हटाएँ, पर्यावरण बचाएँ - देव कांत मिश्र 'दिव्य'	19
8	प्रकृति की गोद में एक दिन - सुरेश कुमार 'गौरव'	21
9	निष्प्रभावी होता सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध - आशीष अम्बर	22
10	प्रकृति के साथ पुनः जुड़ाव की पुकार - सुरेश कुमार गौरव	24

विद्या के दो क्षेत्र

-बालकृष्ण भट्ट

(3 जून 1844-20 जुलाई 1914)

साहित्य और विज्ञान दोनों मानो विद्या के दो नेत्र हैं। जो साहित्य में प्रवीण है और विज्ञान नहीं जानता अथवा विज्ञान में पूर्ण पंडित है और साहित्य नहीं जानता, वह मानो एक आँख का काना है और जो दोनों में से एक भी नहीं जानता, वह अंधा है। विद्या 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ ज्ञान है और नेत्र 'नी' धातु से है, जिसके मानी ले जाने वाले के हैं। साहित्य और विज्ञान ये दोनों मनुष्य को ज्ञान की ओर ले जाने वाले हैं। ज्ञान से मतलब यहाँ घट-पट आदि लौकिक पदार्थों को जान लेने से नहीं है—वरन् इस स्थावर, जंगम जगत् का आदि कारण क्या और कौन है तथा अखंड ऐश्वर्यवान् उस सच्चिदानंद सर्वगत सर्वतः परिपूर्ण का इस अनेक खंड में विभक्त दुःखौघ व्याप्त, अचिर, स्थाई, मरु-मरीचिका सद्दश मिथ्या जगत् से क्या और कैसा संबंध है —इसका जानना ज्ञान कहा जाएगा। साहित्य की हमारे यहाँ कभी कमी नहीं रही। संस्कृत का साहित्य सदा से सर्वांग पूर्ण था। कहीं पर किसी अंश में किसी तरह की कमी इसमें नहीं पाई गई। आदि में वेद का साहित्य सर्वांग पूर्ण था। भाषा का गौरव जिन-जिन बातों में गिना जाता है, वे सब उसमें पाई जाती हैं। उसी वेद की इबारत का अनुकरण करते हुए ऋषियों ने सूत्रों की कल्पना की। छहों दर्शन, व्याकरण, कल्प, निरुक्त तथा और और विषय सूत्र के आकार में पाए जाते हैं जिनमें साहित्य के सिवाय अनेक वैज्ञानिक विषयों का भी सूत्रपात किया गया है। प्रत्येक विषय पर ऋषियों के सूत्र पाए जाते हैं। जिस पर ऋषियों का सूत्र नहीं है उसका प्रमाण नहीं लिया जाता। मुहूर्त्त ग्रंथों पर ऋषियों का ग्रंथ नहीं है। इससे मालूम होता है कि अपनी दूकानदारी क़ायम रखने को ब्राह्मणों ने मुहूर्त्तों की कल्पना कर ली है। नहीं तो क्या कारण कि कामशास्त्र ऐसे असत् शास्त्र पर तो वात्सायन का सूत्र हो पर मुहूर्त्तों के संबंध में आर्ष प्रमाण कुछ भी न हो। इससे सिद्ध होता है कि मुहूर्त्तों की कल्पना हाल की है और निरी दूकानदारी है। जब हिंदुस्थान ग़ुलामी की आदतों में पड़ गया और निहायत गिर गया, मूर्ख प्रजा को मुट्ठी में करने के लिए ब्राह्मणों ने तिथि, वार, नक्षत्र, योग करण के द्वारा पंचांग क़ायम कर मुहूर्त्तों की कल्पना की। बिना ब्राह्मण के काम न चले इसलिए क़दम-क़दम पर साइत और मुहूर्त्त लोग विचरवाने लगे। यहाँ तक कि एक पाँव रख दूसरा पाँव बिना साइत मुहूर्त्त के न रखेंगे, जो इस बात का मानो सबूत है कि हम लोगों में कहाँ तक मानसिक बल का अभाव है।

उपरांत उन्हीं सूत्रों की वृत्ति और भाष्य बने, जिससे उन सूत्रों के अर्थ और तात्पर्य विशद किए गए। कुमारिल, वाचस्पति, सायन, माधव आदि बड़े-बड़े दार्शनिक पंडित हुए। उस समय वेद की भाषा से अलग एक नई तरह की भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। वेद तथा ऋषियों के बनाए ग्रंथ, जिन्हें हम आर्ष कहेंगे, यद्यपि यवनों के उपद्रव के समय बहुत से उनमें लुप्त हो गए, फिर भी उनमें के बचे बचाए मुद्रांकित करा चिरस्थाई कर दिए गए हैं। इससे निश्चय होता है कि संस्कृत-साहित्य इतना अगाध है कि उसका थहाना अथवा इस साहित्य-महोदधि के पार जाने के लिए सौ वर्ष की ज़िंदगी भी काफ़ी नहीं है। योगी या कोई देवी शक्ति संपन्न की तो बात ही निराली है। साधारण मनुष्य का काम नहीं है कि उसके समस्त साहित्य को पीकर बैठ रहे।

विद्या के दो क्षेत्र

-बालकृष्ण भट्ट

(3 जून 1844-20 जुलाई 1914)

जिस समय कुमारिल आदि दार्शनिक हुए; लगभग उसी समय के आगे या पीछे प्रत्येक विषय के प्रतिभाशाली अनेक विद्वान् हुए। कैयट, वामन, जयादित्य आदि कई प्रसिद्ध वैयाकरण; आर्यभट्ट, वाराह-मिहिर आदि गणितज्ञ; कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष, वाण, मयूर, माघ, भारवि, दंडी आदि कवि; अपने-अपने विषय में अद्भुत प्रतिभावान हुए। कविता के संबंध में जगन्नाथ पंडितराज के उपरांत फिर कोई ऐसा कवि नहीं हुआ जो विशिष्ट कवियों की श्रेणी में गिना जाए। न दीक्षित और नागेश से अधिक कोई वैयाकरण हुआ जो आज पुराने पंडितों की बराबरी का कहा जा सके। ऐसे ही गदाधर और जगदीश भट्टाचार्य के समकक्ष का कोई नैयायिक उनके उपरांत नहीं हुआ। आधुनिक ग्रंथकार और पंडितों ने आर्ष प्रणाली को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इनके लेख का मुख्य उद्देश्य केवल वितंडावाद और खंडन-भंडन मात्र रह गया। सहज से सहज शब्दों में पदार्थ का निर्णय और तत्व का अवबोध जैसा उन ऋषियों की चातुरी का लक्ष्य था सो न रहा। इसी से इस समय के अधिकांश पंडित जन्म भर पढ़-पढ़कर पचते हैं, पर न तो सांसारिक व्यवहार में वे चतुर होते हैं और न उन्हें वास्तविक तत्त्व ज्ञान ही होता है। यह बात शंकराचार्य के जन्म के उपरांत हमारे संस्कृत साहित्य में उपज खड़ी हुई। ऋषियों के लेख में वाद-विवाद से कोई सरोकार न रख, केवल तत्त्व क्या है, इसी पर उनका लक्ष्य था। यदि उसी क्रम का अनुसरण हम बराबर किए जाते तो हमारी जाति में वैसी कमज़ोरी न आती जैसी तत्त्वावबोध से बहिर्मुख होने के कारण हम में आ घुसी है। इधर मुसलमानों के आक्रमण आरंभ हुए, उधर हमारे पंडित खंडन-मंडन में लग आपस की फूट और ईर्ष्या, द्रोह तथा दलादली को बढ़ाते ही गए। इससे आधुनिक पंडितों के लेखों में मुल्की जोश का कहीं छुवाव तक नहीं हुआ। बहुत दिनों तक तो पंडितों की यह चेष्टा रही कि कैसे बौद्ध और जैनियों को परास्त और उनका नाश कर वैदिक धर्म को फिर से देश में स्थापित करें। वाचस्पति आदि ग्रंथकार तथा खंडनखाद्य आदि ग्रंथों का यही क्रम रहा। इसमें संदेह नहीं, इस समय संस्कृत की उन्नति बहुत हुई। इस नई प्रणाली के बहुत अच्छे कुसुमांजलि आदि ग्रंथ बने, जिनको लगाने या विचारने में दिमाग़ चक्कर में आ जाता है, पर उन पुस्तकों की पंक्ति हल नहीं होती। ऋषियों के ग्रंथ की पंक्ति तथा शब्द बड़े सहज हैं; पर अर्थ की गंभीरता उनमें इतनी भरी हुई है कि विद्या-रसिक को उनके हल होने पर बहुमूल्य रत्न हाथ लग जाता है और लड़का पैदा होने की ख़ुशी भी उस विनोद की ख़ुशी के मुक़ाबिले तुच्छ मालूम देती है। इसी से हम कई बार लिख चुके हैं कि आर्य जाति के विजित हो जाने पर हम नेता हैं, हम स्वच्छंद हैं—यह भाव हम लोगों में से उठ गया।

संस्कृत कहाँ तक साहित्य से भरी पूरी है—सो हम दिखा चुके। साथ ही विज्ञान की भी झलक जहाँ-तहाँ आप ग्रंथों में अच्छी तरह पाई जाती है। रहे नवाविष्कृत बहुत से नए-नए विज्ञान, जिनमें भाप और बिजली की करामातों का भरपूर निदर्शन पाया जाता है। जिन पर ख़्याल करने से बहुत दूरदर्शी विद्वानों की भी बुद्धि चकरा उठती है, उनकी कमी अवश्य संस्कृत में माननी पड़ेगी। हमारे पूर्वज सर्वथा विज्ञान के ज्ञान से विमुख थे,

विद्या के दो क्षेत्र

-बालकृष्ण भट्ट

(3 जून 1844-20 जुलाई 1914)

यह तो कभी न कहा जाएगा क्योंकि जहाँ-तहाँ विमान आदि शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ऐसी कोई वस्तु अवश्य रही होगी; किंतु उनके बनाने की क्या रीति थी इसका विशेष वर्णन कहीं पर कुछ नहीं है। शतन्नी, अग्नि-अस्त्र, वायु-अस्त्र आदि अस्त्रों का प्रयोग पुराणों में पाया जाता है। वाल्मीकि ने जृम्भकास्त्र और व्यास ने ब्रह्मास्त्र को लिखा है। निश्चय ये दोनों कोई ऐसे शस्त्र थे जिन्हें वही चला सकता था जो उतना विज्ञान जानता हो। वाल्मीकि ने मेघनाद और व्यास ने शाल्व को इस विद्या में बड़ा प्रवीण लिखा है और जृम्भकास्त्र की भी बड़ी महिमा गाई है। निश्चय यह कोई ऐसा शस्त्र रहा जिसके चलाने पर हवा से उसका स्पर्श होने से उसमें कोई ऐसी बात पैदा हो जाती थी जिससे शत्रु के दलवाले मुग्ध और बेहोश हो जाते थे। इससे प्रकट है कि इस समय के रसायनिक विज्ञान से भी वे अनभिज्ञ न थे। जब हमारे पहिले के ब्राह्मण ज्ञान से सुसंपन्न थे तब ज्ञान के इन दो नेत्रों में एक में वंचित रहे हों, ऐसा संभव नहीं। विज्ञान की इतनी उन्नति चाहे तब न रही हो पर संपूर्णतया अभाव था, सो भी कभी न माना जाएगा। विज्ञान के किस विभाग में हमारे पुराने आर्य हेठे रहे हैं तथा इनके वंशधर अब के लोग दिमाग़ी क़बूत में किसी जाति से कम हैं—यह बहुत अच्छी तरह परख लिया गया है और कई बार कसौटी से तय हो चुका है कि यह इनके परिष्कृत मस्तिष्क ही का सब है कि हिंदुस्तानी नौजवान तालीम के, हर एक हिस्से में इतनी कड़ाई होने पर भी फबकते आते हैं।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ और हम 1

आशीष अम्बर । शिक्षक । उक्रमित मध्य विद्यालय धनुषी, केवटी, दरभंगा

हमें जो स्वस्थ पर्यावरण विरासत में मिला है, वह हमारे पास भावी पीढ़ियों की धरोहर है। भावी पीढ़ी को यह धरोहर स्वच्छ व स्वस्थ रूप में सौंपना हमारा दायित्व व कर्तव्य है। स्वस्थ और स्वच्छ पर्यावरण स्वस्थ मानव जाति के अस्तित्व व विकास के लिए भी आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण की समस्या मूलतः 20वीं सदी की देन है। पर्यावरण में वायु, जल, पहाड़, मैदान, रेगिस्तान, पठार, वन, विविध जीव–जन्तु शामिल हैं। इन सभी के बीच अन्योन्याश्रित अन्तर्संबंध रहता है और प्रकृति स्वयं अपना पारिस्थितिक संतुलन स्थापित करती है, किंतु इस सृष्टि की सर्वोत्तम कृति मनुष्य ने अपनी बुद्धि का आश्रय लेकर जीवन को सुखमय और विलासितापूर्ण बनाने के अनेकानेक उपकरणों का आविष्कार किया है। ये नित नए आविष्कार और औद्योगीकरण प्रकृति के संतुलन को नष्ट कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, आज वायु, जल और भूमि तीनों अत्यंत प्रदूषित हो चुके हैं। महानगरों में यह समस्या और भी गम्भीर हो गई है।

विकास आज विनाश का पर्याय बनता जा रहा है। वायु को मोटर वाहनों और उद्योगों की चिमनियों से निकले विषैले धुएँ ने प्रदूषित कर दिया है, तो जल को औद्योगिकी निर्माण के दौरान निकलने वाले घातक रसायनों के निःस्राव और जल–मल ने। भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए जिन रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल हम कर रहे हैं, वे हीं उर्वरक भूमि को प्रदूषित कर रहे हैं, फसल पर भी रसायनों के घातक प्रभाव पड़ रहे हैं।

बढ़ते वाहनों का धुआँ, औद्योगीकरण की तीव्र गति कचरे का बढ़ता ढ़ेर, सफलता और विलास के साधन पर्यावरण को तेजी से प्रदूषित कर रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम विकास के उन साधनों को ही अपनाएं, जो पर्यावरण के अनुकूल हों। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने भी हमारे समक्ष इन संसाधनों की वैकल्पिक सामग्री तलाशने की और सीमित संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल की चुनौती मायने रखती है। पर्यावरण एक देश विशेष तक सीमित न होकर आज एक विश्वव्यापी (GLOBAL) समस्या बन गया है। पर्यावरण के महत्व को देखते हुए भारत सरकार ने ECO मानकीकरण योजना लागू करने का निश्चय किया है। प्लास्टिक के सिंगल यूज कचरे का निपटान हो या फिर जंगलों का बेतहाशा कमी, या फिर ग्लेशियर का पिघलना हो। ये सभी चिंता का विषय हैं। तो आइए हम प्रण करें कि इस पर्यावरण दिवस पर राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य का हरसंभव निर्वहन करें।

फूल और पर्यावरण 2

रुचिका । शिक्षिका । राजकीय उत्क्मत मध्य विद्यालय तेनुआ गुठनी, सिवान

“माँ! माँ देखो न, मैं कितने सारे फूल तोड़ कर लाया हूँ।” अति उत्साह से यह कहते हुए दस वर्षीय मयंक माँ के सामने एक प्लास्टिक के थैले से, ढेर सारे खिले, अधखिले फूल चौकी पर गिरा दिया।

मयंक की माँ का आश्चर्य से मुँह खुला रह गया और उन्होंने नाराजगी दिखाते हुए मयंक से कहा, “बेटा तुमने इतने फूल तोड़े क्यों? आखिर इनकी क्या जरूरत थी? उसमें भी कुछ फूल अधखिले हैं, कुछ टहनियों और कुछ पत्तियों के साथ हैं।”

“तुम्हें एक तो बिना वजह फूल तोड़ना नहीं चाहिए। डाली पर खिले हुए फूल कितने मनमोहक लगते हैं और आस-पास की शोभा बढ़ाते हैं। उनकी सुरभि से पूरा वातावरण सुरभित हो जाता है।”

“दूसरे, तुमने पत्तियों, टहनियों को भी तोड़कर पौधे को नुकसान पहुँचाया है। तुम्हें पता है न पौधे हमारे पर्यावरण के लिए कितने जरूरी हैं, ये पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं। अगर तुम्हें बेवजह चोट दी जाएगी तो तकलीफ होगी न पौधे में भी तो जीवन है। उन्हें भी तो तकलीफ होती होगी।

वादा करो आज के बाद तुम ऐसा नहीं करोगे।”

मयंक ने कान पकड़कर कहा, “सॉरी माँ आज के बाद मैं बिल्कुल ऐसा नहीं करूंगा और मैं घर के आस-पास, विद्यालय प्रांगण में पौधे भी लगाऊंगा और उनकी देखभाल भी करूँगा।”

मयंक के ऐसा कहने पर उसकी माँ ने उसे गले लगा लिया और कहा शाबाश बेटा, खूब आगे बढ़ो।

इस प्रकार आप भी प्रयत्न करें कि अपने आस-पास पेड़ पौधे लगाकर पर्यावरण को शुद्ध करें।

रूपा ने पेड़ लगाई स्वच्छ पर्यावरण पाई

3

नीतू रानी । शिक्षिका । म० वि० सुरीगाँव, बायसी, पूर्णियाँ

एक लड़की थी, उसका नाम था रूपा। रूपा रोज स्कूल जाती थी। जब स्कूल से घर आती तो उसको घर आने का मन नहीं करता क्योंकि स्कूल में बहुत सारे रंग-बिरंगे पेड़ लगे थे। मीठी-मीठी ठंडी आनंददाई हवा चलती रहती थी। रूपा का मन करता कि इसी पेड़ के नीचे सो जाऊं। रूपा छुट्टी के बाद कुछ देर तक पेड़ के नीचे बैठकर हवा खाती और बाद में घर जाती।

रूपा गरीब परिवार में पली बढ़ी थी। आधा कट्ठा जमीन में दो छोटे-छोटे कमरे थे। उस घर में न खिड़की थी और न ही घर के अंदर हवा आती थी। गर्मी का समय था, दरवाजे पर पेड़-पौधे भी नहीं जो घर आँगन में हवा आए।

एक दिन रूपा सोचीं कि अगर दरवाजे पर दो-चार पेड़ लगा दे, तो यहाँ भी स्कूल की तरह मीठी- मीठी हवा आने लगेगी। रूपा रोज स्कूल जाती ही थी। जब स्कूल से घर आती तो रास्ते में सड़क किनारे बेकार पड़े कोई पौधा देखती तो उसको वह उखाड़ कर ले आती और अपने दरवाजे पर लगा देती। जैसे किसी दिन उसको कदम्ब का पेड़ मिल गया, कभी अमरूद का पेड़ मिल गया, कभी आम का पेड़ मिल गया।

अब रोज रूपा सुबह-शाम उस पेड़ में पानी देती, समय-समय पर उसको साफ़ करती, देखते-ही-देखते पेड़ बड़े हो गए और पेड़ से हवा आने लगी, साथ हीं साथ फल भी उसमें आने लगे, यह देख रूपा खुशी से झूम उठी कि पेड़ लगाने से पर्यावरण भी शुद्ध हो गया।

अब रूपा को घर बैठे पेड़ से शुद्ध हवा मिलने लगी, पेड़ से फल मिलने लगे, जलावन मिलने लगे। रूपा की माँ फल तोड़कर बाजार बेचने जाती और बहुत सारे पैसे हो जाते, अब रूपा का दुखी जीवन सुधरने लगा। रूपा और रूपा का परिवार सुखी से रहने लगे स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण में।

पर्यावरण संरक्षण : हमारा कर्त्तव्य 4

नूतन कुमारी । शिक्षिका । मध्य विद्यालय चोपड़ा बलुआ, पूर्णियाँ

पर्यावरण हम मानव जाति के लिए ईश्वर का दिया हुआ सर्वश्रेष्ठ उपहार है। पर्यावरण की वजह से ही हम मानव जीवन का अस्तित्व हैं। पर्यावरण से हमें वो हर संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं, जो किसी सजीव प्राणी को जीवन जीने के लिए अति आवश्यक है। इसके वजह से ही हमे जीवन की लगभग सारी सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं। मानव को जीवन प्रदान करने के बावजूद आज के युग में पर्यावरण का नुकसान हो रहा है, जिसकी वजह से प्रदूषण व कई प्रकार के संकट के बादल हम पर मँडरा रहे हैं। आज के समय में मानव अपने तुच्छ स्वार्थसिद्धि हेतु पर्यावरण से खिलवाड़ करने को आतुर दिखाई पड़ता हैं। अगर भविष्य में ऐसा ही चलता रहा तो मानव का अस्तित्व महज एक इतिहास बनकर रह जाएगा। ऐसे समय में हमें पर्यावरण को संरक्षित करना चाहिए एवं लोगों को पर्यावरण संरक्षण के उपाय बताकर उन्हें भी जागरूक करना चाहिए, यही समय की मांग हैं। पर्यावरण का सीधा संबंध हमारे प्रकृति से है। गत वर्षों में कोरोना के कहर से परेशान दुनिया को लॉकडाउन के वजह से थोड़ी सी राहत मिली थी, जैसे ही गाड़ियां, कारखाने चलने बंद हुई, लोगों का निकलना बंद हुआ, हमारी प्रकृति ने थोड़ी राहत की सांस ली थी। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि आखिर यह चंद प्रयासों से कब तक प्रकृति संरक्षित हो पाएगी। वास्तव में आज पर्यावरण से सम्बद्ध ज्ञान को व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है, ताकि ऐसी परिस्थिति में जनमानस पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्य और दायित्व का निर्वहन कर सके।

हमें पर्यावरण को संरक्षित करने हेतु कुछ निम्न कार्य करने चाहिए-

- हमें अपने आस पास गंदगी फैलने से रोकना चाहिए।
- कम से कम महीने में एक पौधा तो अवश्य लगाना चाहिए, जिससे हमारा पार्यावरण संतुलित रहे।
- नदी, तालाब, झरनें, पोखर मे कचड़े फेकने से बचें।
- अगर किसी आयोजन, समारोह या किसी को सम्मानित करने हेतु अगर पौधे गिफ्ट दिये जाएं तो यह पर्यावरण के प्रति बहुत अच्छा प्रयास होगा। अगर हम चाहेंगे तो हमारा पर्यावरण फिर से खिल उठेगा।आज बढतें प्रदूषण के कारण ही हमारे पर्यावरण को क्षति पहुंच रही हैं, जानवर विलुप्त होते जा रहे है और धीरे धीरे मनुष्य भी प्रभावित हो सकते हैं। प्रदूषण के कारण पूरी पृथ्वी दूषित हो रही है और अगर हम अब भी पर्यावरण संरक्षण की ओर अग्रसर नहीं होंगे तो एक दिन मानव सभ्यता का अंत निश्चित है। पर्यावरण संरक्षण से ही धरती पर जीवन का संरक्षण संभव है , अन्यथा मंगल ग्रह या अन्य ग्रहो की तरह पृथ्वी का भी जीवन चक्र समाप्त हो जाएगा। प्रदूषण एक अभिशाप बनकर हमारे संपूर्ण पर्यावरण को नष्ट करने के लिए हमारे सामने खड़ा है इसलिए अगर हम खुद अपने पर्यावरण की रक्षा नहीं करेंगे तो धीरे धीरे जिंदगी मुश्किल होती चली जाएगी, हमें सांस लेने को ऑक्सीजन तक मिलना मुश्किल हो जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण : हमारा कर्तव्य

4

नूतन कुमारी । शिक्षिका । मध्य विद्यालय चोपड़ा बलुआ, पूर्णियाँ

पर्यावरण की महत्ता को समझाने के लिए ही
प्रतिवर्ष पार्यावरण दिवस मनाया जाता हैं।

“हरे वृक्ष से वायु प्रदूषण का,
संहार होना चाहिए,
हरियाली और प्राण वायु का,
बस अम्बार होना चाहिए।”

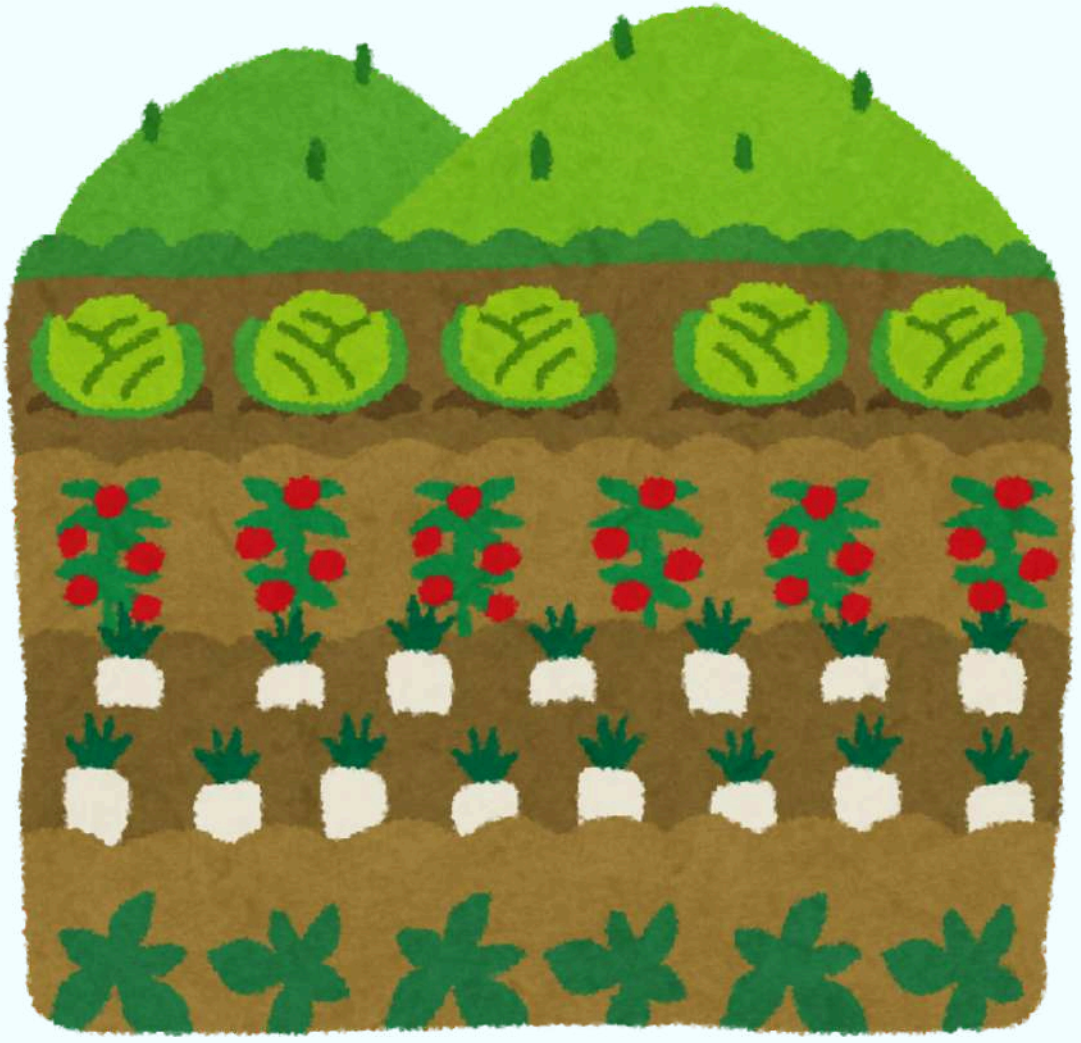

वृक्षारोपण-वृक्षसंरक्षण 5

गिरीन्द्र मोहन झा । शिक्षक । +२ भागीरथ उच्च विद्यालय, चैनपुर-पड़री, सहरसा

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण/प्रकृति के सभी जीवनी-शक्तिदायिनी घटकों को देवतुल्य मानकर उनके प्रति श्रद्धा रखी जाती है। प्रथम सद्ग्रंथ वेद, जो कि अब भी संसार को दिखाने का काम करते हैं, में सूर्यसूक्त, पृथ्वीसूक्त आदि भरा-पड़ा है। भारतीय सद्ग्रंथों के अनुसार प्रकृति और पुरुष(ईश्वर) के मेल से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। प्रकृति सबकी माता और ईश्वर हमारे पिता हैं।

भारतीय संस्कृति में वृक्ष का श्रेष्ठ स्थान है। वेद में कहा गया है- *"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"* (भूमि मां है, हम सब इनकी संतान हैं।) वृक्षारोपण और वृक्ष-संरक्षण के द्वारा ही हम पृथ्वी माता की सेवा कर सकते हैं। महाभारत में एक वृक्ष को दस पुत्रों के समान माना गया है।

शुक्रनीति कहती है, नास्ति मूलमनौषधम् । (ऐसी कोई वनस्पति नहीं, जिसमें कोई न कोई औषधीय गुण नहीं हो, हमें उसकी जानकारी नहीं है।)

भारतीय संस्कृति में तुलसी, अश्वत्थ(पीपल), अशोक, आँवला, बिल्ववृक्ष, शमी आदि को देवतुल्य मानकर उनकी आराधना की जाती है।

श्रीमद्भगवद्गीता के दशम् अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

"सर्ववृक्षाणां अश्वत्थोऽहम्" ।(सभी वृक्षों में मैं पीपल हूँ।)

श्री शिवमहापुराण के अनुसार, बिल्ववृक्ष के मूल में भगवान रुद्र का निवास है। बिल्व वृक्ष के मूल का जल शीश पर धारण करने से सभी तीर्थों के जल का फल मिलता है। सर्वविदित है कि भगवान शिव को बेलपत्र परमप्रिय है।

वट-सावित्री व्रत के दिन भारतीय महिलाएं सुहाग और सौभाग्य की रक्षा के लिए वटवृक्ष का पूजन-अर्चन अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझकर करती है। शास्त्रों में वट-वृक्ष को पूजनीय माना जाता है।

प्रायः फल और कांटेदार वृक्षों को लोग घर-आंगन में नहीं लगाते हैं।

आम, लीची, कटहल, अमरूद आदि को बगीचा में ही लगाया जाता है।

विज्ञान भी इन पूजनीय वृक्षों की महत्ता को समझ और कुछ हद तक सिद्ध कर चुका है।

वृक्षारोपण से बहुत ही अधिक महत्व वृक्ष को सींचने और वृक्ष के संरक्षण का महत्व है।

आज के विकास के दौर में हमें विकास के साथ-साथ पर्यावरण को भी देखने की आवश्यकता है। विकास और पर्यावरण-संरक्षण दोनों का संतुलन करके चलना होगा। जैसे बंजर भूमि में उद्योग लगाने की आवश्यकता है। मोबाइल टावर से निकलने वाले रेडिएशन से पक्षियों की बहुत सारी प्रजाति गायब हो रही हैं। इस पर भी हमें सोचने की आवश्यकता है। उसके रेडिएशन के प्रतिकार के लिए भी कुछ सोचना होगा।

प्रार्थना में अद्भुत शक्ति होती है और सार्थक श्रम बहुत बड़ी प्रार्थना है। पुष्प आदि के वृक्षों को सींचना और उसकी रक्षा करना भी सार्थक श्रम है। इससे बहुत संतुष्टि मिलती है।

जन्मदिवस, पर्यावरण दिवस, पृथ्वी दिवस आदि अवसरों पर हमें वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए। डॉ ए.पी.जे अब्दुल कलाम ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन काल में कम से कम दस वृक्ष लगाने और उसका संरक्षण करने का परामर्श दिया है।

बहुत सारे पर्यावरणविद् हमारे देश में आ चुके हैं।

वृक्षारोपण-वृक्षसंरक्षण 5

गिरीन्द्र मोहन झा । शिक्षक । +२ भागीरथ उच्च विद्यालय, चैनपुर-पड़री, सहरसा

मेरे आदरणीय गुरुदेव *श्री नरेश कुमार* (*रसायनशास्त्र विभागाध्यक्ष, भू. ना. मं. विश्वविद्यालय, मधेपुरा*) ने पर्यावरण संरक्षण के लिए कई वृक्षों को विश्वविद्यालय में लगाया, लगवाया और यह कार्य अभी भी जारी है। अभी इनके उद्योग के फलस्वरूप विश्वविद्यालय में कई वृक्ष लहलहा रहे हैं।

मेरे मित्र रवीन्द्र कुमार 'बिट्टू' (ग्राम-अगुवानपुर, जिला-सहरसा) समय-समय पर न केवल वृक्षारोपण करते हैं, प्रत्युत् विशेष कार्यक्रम के माध्यम से वृक्षों का दान भी करते हैं। वृक्षों का धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक महत्व भी बताते हैं और लोगों को प्रेरित भी करते हैं। जिला-स्कूल, सहरसा में उन्हें वर्ष 2018 में उन्हें वृक्ष-पुत्र की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से और भी न जाने कई सारे दृष्टांत भरे पड़े हैं, मानव समाज में, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। वही लोग इस ओर ध्यान दे रहे हैं, जिन्हें आगे आने वाली पीढ़ियों की विशेष चिंता है।

वृक्ष लगाएं जीवन बचाएं,
इस धरा को स्वर्ग बनाएं।

हम और हमारा पर्यावरण 6

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या । उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

हम सब प्रकृति के अंग और सहचर हैं, साथ ही सबसे बुद्धिमान होने का गौरव भी हमें प्राप्त है। सभ्यता के विकास के साथ हमने अपनी सुविधाओं के लिए संसाधनों के अनवरत दोहन करने में अपनी सारी बौद्धिक और शारीरिक शक्ति लगा दी। परिणामस्वरूप, उस प्रकृति का विनाश कर डाला जिसके हम सहचर होने का दंभ भरते हैं। इस प्रकार प्रकृति में अवांछित परिवर्तन लाकर हमने प्रकृति को प्रदूषित किया। अपने स्वयं के लिए सुविधाओं का विकास करने के क्रम में प्रकृति का विनाश किया, उसे विद्रूपित किया और प्रकृति ने भी समय समय पर अपना रौद्र रूप दिखाया – कभी महामारी कोरोना के रूप में तो कभी दुर्भिक्ष और कभी भूकम्प, बाद इत्यादि।

हम प्रकृति के दोषी हैं। वास्तव में हमारी भारतीय संस्कृति प्रकृति के साथ सामंजस्य बना कर चलना दिखती है। यह सर्वत्र शांति और सबके सुख की कामना करने वाली सर्व समावेशी संस्कृति है। हम पश्चिम की चकाचौंध में अपनी मूल संस्कृति को भुला कर उपभोक्तावादी संस्कृति के गुलाम हो गए और अंधाधुंध पेड़ पौधों नदी नाले जल मृदा वायु और व्योम को नष्ट किया। हमें परस्पर सहअस्तित्व का भाव उत्पन्न करना होगा। अपनी आवश्यकता को कम कर संसाधनों का संरक्षण के कारण ही होगा। यदि हम प्रकृति को प्रदूषण से नहीं बचाएंगे तो हम स्वयं भी नष्ट हो जाएंगे। अतः यह हम सबके हित में है कि हम उपभोक्तावादी संस्कृति को छोड़कर समन्वयवादी विचार धारा के साथ सम्यक संतुलित विकास की ओर अग्रसर हो।

प्लास्टिक हटाएँ, पर्यावरण बचाएँ 7

देव कांत मिश्र 'दिव्य' । मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज भागलपुर

पर्यावरण हमारे लिए एक बहुचर्चित विषय है तथा यह पूरी दुनिया के लिए एक ज्वलंत समस्या है। इस वर्ष पर्यावरण दिवस का विषय है: " वैश्विक प्लास्टिक प्रदूषण का अंत।" प्रस्तुत विषय पर विचार-विमर्श हेतु सबसे पहले पर्यावरण शब्द पर चर्चा करना आवश्यक है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है – परि+आवरण। यहाँ परि का अर्थ है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ घेरा है। यानि हमारे परिवेश को निर्मित करने वाले समस्त जैविक और अजैविक घटक तथा मानव निर्मित सभी वस्तुएँ हमारे पर्यावरण को निर्मित करती है। इस तरह मिट्टी, पानी, हवा, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सभी कुछ पर्यावरण के अंग हैं और इन सभी के परस्पर तालमेल को – उचित मात्रा मात्रा में होने को पर्यावरण संतुलन कहा जाता है। हम अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए पर्यावरण पर निर्भर रहते हैं। परन्तु हमें यह भी सोचना चाहिए कि इसके बदले हम अपने पर्यावरण को क्या देते हैं? जिस दिन हम सकारात्मक चिंतन कर लेंगे उस दिन हमारा पर्यावरण अभिराम बन जाएगा। यही कारण है कि सर्वोच्च न्यायालय ने पर्यावरण के व्यापक महत्त्व पर विचार करते हुए सभी शैक्षिक संस्थानों के लिए पर्यावरण संरक्षण के लिए बच्चों के माध्यम से आम लोगों को तैयार होने के लिए प्रेरित करने को कहा है। एक बात दीगर है कि हम जिस पृथ्वी पर निवास करते हैं उसकी प्राकृतिक छटा अत्यधिक मनमोहक है। यथार्थ के धरातल पर यदि कुछ पल के लिए हम मानवीय क्रियाकलापों से किसी भी प्राकृतिक वनस्थली, पारम्परिक ग्रामीण परिदृश्य, कल-कल बहती नदियों अथवा पर्वत की किसी उपत्यका के सुरम्य दृश्य की कल्पना करें तो हमारा मन बरबस ही उनकी ओर खींचा चला आता है। हमारी वसुंधरा बहुत ही सुंदर है। यह हमें जीवित रखने के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराती है। परन्तु अब जीवन के लिए आवश्यक बुनियादी वस्तुओं का हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगा है। साँस लेने के लिए न तो अब हमें शुद्ध वायु और न पीने के लिए स्वच्छ जल ही मिल पाता है। साथ ही हमें असंदूषित भोजन ही मिलता है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में हमें पर्यावरण पर गहन विमर्श करने की आवश्यकता है।

पर्यावरण की व्यापकता:

स्थूल रूप से पर्यावरण को तीन भागों में बाँटा जा सकता है –

क. *प्राकृतिक पर्यावरण* – इसके अंतर्गत भूमि, जल, वायु, पर्वत, नदी, पेड़- पौधे और जीव-जन्तु आते हैं।

ख. *मानव निर्मित पर्यावरण* – इसके अंतर्गत गाँव, नगर विभिन्न औद्योगिक एवं अन्य मानव निर्मित प्रतिष्ठान, भवन, सड़कें, बाँध, नहरें, यातायात, उद्योग आदि आते हैं।

ग. *सामाजिक पर्यावरण* – इसके अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व्यवस्थाएँ और उनका मानव पर प्रभाव आते हैं, जैसे – जनसंख्या वृद्धि, रोजगार, वाणिज्य इत्यादि। कहने का तात्पर्य है कि पर्यावरण जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़ा हुआ है।

विमर्श और उसकी सार्थकता:

प्लास्टिक हटाएँ, पर्यावरण बचाएँ 7

देव कांत मिश्र 'दिव्य' । मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज भागलपुर

आज हमें पर्यावरण तथा उसकी विश्वव्यापी समस्या पर विचार-विमर्श करने की महती आवश्यकता है। प्रायः हम सभी जानते हैं कि पेड़- पौधे हमारे अभिन्न अंग हैं। इसे हमें नहीं काटना चाहिए। अंधाधुंध कटाई से हमें लाभ नहीं अपितु हानि ही होगी।

वृक्षों से हमें फल फूल के अतिरिक्त स्वच्छ हवा मिलती है। ये वर्षा करने में सहायक होते हैं। इतना जानकर भी हम इसे नष्ट करने से बाज नहीं आते। प्रकृति के बहुमूल्य धरोहर नदी के जल में कूड़े- कचरे तथा अन्य अवांछित रासायनिक तत्वों को डालकर दूषित करते रहते हैं। इसके साथ- साथ मशीनों की आवाजों तथा लाउडस्पीकर आदि के कारण शोर-प्रदूषण की भयंकर समस्या उत्पन्न हो गई है। शादी, उत्सवों, त्योहारों, धार्मिक कार्यों आदि के अवसरों पर होने वाला वायु प्रदूषण लोगों की नींद हराम करते रहता है। विभिन्न प्रकार के रसायनों और कीटनाशकों द्वारा व्यक्ति अनेक रोगों जैसे रतौंधी, लकवा, मस्तिष्क एवं आँख संबंधी बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं। साथ ही जल, मिट्टी, अनाज, फल-सब्जी आदि भी प्रदूषित होते हैं। आज प्लास्टिक के नैनो कण आकाश, समुद्र तथा धरती से लेकर हमारे खाद्य पदार्थों तथा शरीर में भी पाए जाने लगे हैं। परन्तु इसकी ओर कदापि ध्यान नहीं जाता है। कुछ वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के द्वारा यह बताया गया था कि पूरी दुनिया में एक मिनट के भीतर १० लाख प्लास्टिक की बोतलों का उपयोग होता है। जरा सोचें! यह कितना खतरनाक है? इसके उपयोग से श्वसन, अंत:स्रावी तंत्र में गड़बड़ी तथा अनेक तरह के रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इसके साथ-साथ वैचारिक प्रदूषण से भी अनैतिक कार्यों की प्रेरणा मिलती है। खैर जो भी हो, पर्यावरण एक विश्व-व्यापी समस्या है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी लोग प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें। निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए सबको क्षति पहुँचाना बंद करें। भारत के आर्ष- ऋषियों ने आज से शत सहस्त्र वर्षों पूर्व कहा था – "प्रकृति हमारी माता है, जो अपना सब कुछ अपने बच्चों को अर्पण कर देती है।"

अतः आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी माता (प्रकृति) की रक्षा करें। हमें विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सच्चे मन से संकल्प लेना होगा कि पर्यावरण हमारा सच्चा मित्र है। इसे हम चित्र बनाकर दिल में बसाएँ। इसके साथ हमें सुंदर व्यवहार करना है। इसे किसी भी परिस्थिति में कष्ट नहीं पहुँचाना है। हम अपनी आदतों में बदलाव लाएँ। अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें। प्लास्टिक की जगह कपड़े से निर्मित थैला का उपयोग करें। हम अपने विद्यालय के बच्चों को प्लास्टिक से होने वाली हानि के बारे में चर्चा करते हुए समयानुसार जागरूकता अभियान चलाएँ। यह सिर्फ मेरी ही नहीं अपितु समाज के सभी नागरिकों की जिम्मेदारी बनती है।

प्रकृति की गोद में एक दिन 8

सुरेश कुमार गौरव । प्रधानाध्यापक । उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा ,पटना

वर्षा ऋतु की प्रातःकाल थी। आकाश हल्के बादलों से ढका था और धरती पर ओस की बूंदें फूलों की पंखुड़ियों से फिसल रही थीं। मैंने निश्चय किया कि आज एक दिन प्रकृति की गोद में बिताया जाए — न मोबाइल, न शोर, न यंत्रों की दुनिया, बस मैं और हरितिमा का साथ।

मैं पटना से सटे एक गाँव की ओर निकल पड़ा - जहाँ अब भी खेतों में हल चलते हैं, तालाबों में कमल मुस्काते हैं, और पेड़ों पर कोयलें गाती हैं। जैसे ही शहर की सीमा लांघी, मानो मैं एक दूसरे लोक में आ गया।

सड़क के दोनों ओर फैले खेतों में धान की बालियाँ हवा में झूम रही थीं। बगुले, सारस और नीलकंठ खुले आकाश में कलाबाजियाँ कर रहे थे। एक जगह मैंने रुककर नदी किनारे बैठने का निश्चय किया। गंगा की एक छोटी उपधारा वहां शांति से बह रही थी- जल इतना स्वच्छ कि तल तक के पत्थर दिखें। मैंने वहीं बैठकर अपने जूते उतार दिए और नंगे पाँव मिट्टी को महसूस किया। वह मिट्टी ठंडी थी, सौंधी थी, जीवन-सी सजीव।

अचानक मेरे पास एक गाँव का बालक आया। उसके हाथ में एक मटकी थी, जिसमें वह पानी भरने आया था। मैंने उससे पूछा, "बेटा, स्कूल जाते हो?" उसने मुस्कुरा कर कहा, "पहले तो जाऊँगा नदी में नहाने, फिर पेड़ से अमरूद तोड़ूँगा और फिर स्कूल!" उसकी आँखों में प्रकृति की चमक थी।

वहीं पास में एक वृद्ध किसान अपने बैल को स्नेह से सहला रहा था। मैंने उसके साथ कुछ समय बिताया। वह बता रहा था कि किस तरह मौसम में बदलाव आया है – बारिश कभी समय पर नहीं होती, गर्मी बहुत बढ़ गई है, तालाब सूखने लगे हैं। वह चिंतित था, पर आशावान भी – बोला, "अगर लोग पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ और खेतों को ज़िंदा रखें, तो प्रकृति भी फिर हरे रंगों में लौट आएगी।"

शाम होते-होते मैं एक आम के बाग में जा पहुँचा। वहाँ पक्षियों की चहचहाहट थी, हवा में मिट्टी और पत्तों की मिली-जुली महक थी। मैंने अपनी डायरी निकाली और लिखा-

"प्रकृति हमें केवल भोजन, जल और वायु नहीं देती, यह हमें अपनापन, शांति और जीवन का संगीत भी देती है।"

उस दिन मैं देर शाम लौटा, पर मेरे साथ एक नया बोध था- पर्यावरण केवल देखने की वस्तु नहीं है, यह जीने की शैली है। यदि हम उसकी रक्षा करें, तो वह हमें हर दिन सौंदर्य, संतुलन और स्नेह की वर्षा देगी।

निष्प्रभावी होता सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध

9

आशीष अम्बर । शिक्षक । उक्रमित मध्य विद्यालय धनुषी, केवटी, दरभंगा

प्लास्टिक के खतरनाक प्रभावों को देखते हुए भारत को ' सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त भारत ' बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 1 जुलाई , 2022 से सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगाए जाने की घोषणा की गई थी। प्रतिबन्धित प्लास्टिक में ईयरबड्स, गुब्बारे के लिए प्लास्टिक की छड़े, झंडे, कैंडी स्टिक, आइसक्रीम स्टिक, पालिस्टाइनिन (थर्मोकोल), प्लेट, कप, गिलास, काँटे, चम्मच, चाकू, पुआल, ट्रे, निमंत्रण कार्ड, सिगरेट के पैकेट, 100 माइक्रोन से कम के प्लास्टिक, पीवीसी बैनर, स्टिटर रैपिंग या पैकेजिंग इत्यादि करीब 19 प्रकार की वस्तुएं शामिल थी । पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना में कहा गया था कि पॉली स्टाइनिन, और एक्सपैंडेड पॉली स्टाइनिन सहित सिंगल यूज प्लास्टिक को परिभाषित करते हुए कहा गया था कि सिंगल यूज वाली प्लास्टिक वस्तु का अर्थ है, प्लास्टिक की वह वस्तु, जिसे डिस्पोज या रिसाइकिल से पहले एक काम के लिए एक ही बार यूज किया जाना है। सिंगल यूज प्लास्टिक प्रायः प्लास्टिक की ऐसी वस्तुएँ होती हैं, जो रिसाइकलिंग प्रक्रिया के लिए नहीं जाती बल्कि इन्हें केवल एक बार इस्तेमाल करने के बाद फैंक दिया जाता है। सरकार द्वारा यह भी कहा गया था कि 75 माइक्रोन से कम मोटाई के पॉलीथीन बैग पर प्रतिबन्ध के बाद 120 माइक्रोन से कम के पॉलीथीन बैग पर भी प्रतिबन्ध लगाया जाएगा। सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ अभियान छेड़ने का कारण यही था कि यदि सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग नहीं रोका गया तो भू–रक्षण का नया स्वरूप सामने आएगा और फिर जमीन की उत्पादकता को वापस प्राप्त करना असंभव होगा। प्लास्टिक प्रदूषण में सिंगल यूज प्लास्टिक का बड़ा योगदान रहा है। इस प्रकार के उत्पादों का कचरा सीवेज सिस्टम के लिए बड़ी चुनौती उत्पन्न करता रहा है और ये उत्पाद जमीन से लेकर पानी तक को भी बुरी तरह प्रदूषित कर रहे हैं। सिंगल यूज प्लास्टिक अक्सर नालों के जाम होने का भी बड़ा कारण है, जिससे शहरी बाढ़ जैसी गम्भीर समस्या भी पैदा हो जाती है। हमारे घरों के कचरे से लेकर पड़ोस के कूड़ेदान तक सिंगल यूज प्लास्टिक ही कचरे में सबसे ज्यादा होता है, बड़ी मात्रा में यही कचरा नालों से बहकर नदियों और समुद्र तक पहुंचता है। समुद्र में पहुंचने पर इसी प्लास्टिक कचरे को समुद्री जीव–जन्तु निगल लेते हैं। समुद्र से निकाली जाने वाली मछलियों तथा अन्य सी–फूड को खाने से प्लास्टिक के ये टुकड़े इंसानों के पेट तक पहुंच सकते हैं, जो आँतों में ब्लॉकेज पैदा कर सकते हैं। भारत में प्लास्टिक कचरे की समस्या कितनी गंभीर है, यह इसी से समझा जा सकता है कि वर्ष 2020–21 के दौरान ही देश भर में 4.12 मिलियन टन प्लास्टिक कचरे का उत्पादन हुआ था। कुल प्लास्टिक कचरे में 10 से 35 प्रतिशत तक सिंगल यूज प्लास्टिक ही होता है। आंकड़ें पर नजर डालें तो भारत में प्रति वर्ष करीब 4 किग्रा प्रति व्यक्ति प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। एक बार उपयोग होने वाले प्लास्टिक से पर्यावरण अव्यवस्थित होता है। पर्यावरण विशेषज्ञों के मुताबिक अधिकांश प्लास्टिक नष्ट होने वाले या बायोडिग्रेडेबल नहीं होते बल्कि वे धीरे–धीरे छोटे टुकड़ों में टूट जाते हैं,

निष्प्रभावी होता सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध

9

आशीष अम्बर । शिक्षक । उक्रमित मध्य विद्यालय धनुषी, केवटी, दरभंगा

जिन्हें माइको प्लास्टिक कहा जाता है।

सिंगल यूज प्लास्टिक चूँकि 'स्वच्छ भारत अभियान' में भी सबसे बड़ी बाधा है, इसलिए लोगों से प्लास्टिक मुक्त भारत की मुहिम में योगदान देने के लिए बाजार से खरीदारी के लिए पॉलीथीन के बजाए कपड़े का थैला इस्तेमाल करने की अपील भी की जाती रही है, लेकिन जिस प्रकार सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध को लागू कराने के मामले में सरकारी तंत्र द्वारा लगातार उदासीनता बरती जाती रही हैं। सिंगल यूज प्लास्टिक ऐसा प्लास्टिक है, जिसे हम एक बार इस्तेमाल कर कूड़े में फैंक देते हैं। पॉलीथीन चूँकि पेपर बैग के मुकाबले सस्ती पड़ती है और टिकाऊ भी है, इसलिए अधिकांश दुकानदार इसका इस्तेमाल करते हैं।

' प्लास्टिक मुक्त भारत' अभियान से जुड़े अधिकारियों का दावा था कि सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लग जाने से भारत में 14 मिलियन टन प्लास्टिक की खपत कम हो जाएगी, लेकिन यह लक्ष्य तभी हासिल होगा, जब नियमों को सख्ती से लागू कराने के प्रति केन्द्र और राज्य सरकारें गम्भीर हों और लोगों को भी इस दिशा में जागरूक किया जाए।

प्रकृति के साथ पुनः जुड़ाव की पुकार 10

सुरेश कुमार गौरव । प्रधानाध्यापक । उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा ,पटना

परिचय: हर वर्ष 5 जून को सम्पूर्ण विश्व में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह केवल एक दिवस नहीं, बल्कि पृथ्वी की पुकार है — जीवन के संतुलन की रक्षा हेतु मानव से उसके उत्तरदायित्व की पुनः स्मृति। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1972 में इसकी स्थापना की गई थी, और तब से यह एक वैश्विक आंदोलन बन चुका है।

इस वर्ष की थीम (2025)- भूमि पुनरुद्धार, मरुस्थलीकरण और सूखा प्रतिरोध

यह विषय स्पष्ट करता है कि केवल वनों की रक्षा नहीं, बल्कि बंजर होती भूमि को पुनर्जीवित करना, जल संचयन को बढ़ाना और भविष्य की पीढ़ियों को सुरक्षित वातावरण देना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

पर्यावरण का वर्तमान संकट:

- जंगलों की कटाई और अंधाधुंध शहरीकरण
- जल स्रोतों का प्रदूषण और क्षय
- वायु गुणवत्ता में गिरावट
- जैव विविधता का ह्रास
- जलवायु परिवर्तन का व्यापक प्रभाव

इन सबने हमारी धरती को चेतावनी दी है। यह केवल मौसम या तापमान की बात नहीं, बल्कि जीवन की समग्र व्यवस्था पर संकट है।

एक शिक्षक, एक छात्र, एक नागरिक का दायित्व:

- पर्यावरण शिक्षा को व्यवहार से जोड़ना: केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहें; विद्यालय में वृक्षारोपण, अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण आदि गतिविधियाँ अनिवार्य बनाएं।

प्रकृति के साथ संवाद करें: बच्चों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करें। एक पेड़ को मित्र की तरह जानें, नदियों को माँ की तरह मानें।

स्थानीय समाधान अपनाएं: प्लास्टिक का प्रयोग त्यागें, साइकिल या पैदल चलें, वर्षाजल संचयन करें, जैविक खेती को बढ़ावा दें।

पर्यावरणीय कविता, गीत और कहानियाँ: भावात्मक स्तर पर जुड़ाव अत्यंत आवश्यक है। छात्रों को प्रेरित करें कि वे प्रकृति को लेकर कविताएँ, कहानियाँ या चित्र बनाएं।

भावनात्मक संदेश:

धरती हमारी माँ है। यदि हमने उसकी उपेक्षा की, तो वह भी मौन नहीं रहेगी। बाढ़, सूखा, महामारी जैसे संकेत उसकी पीड़ा के प्रतिफल हैं।

अब भी समय है-

“नियंत्रण नहीं, सामंजस्य बनाएं!”

“शोषण नहीं, संवर्धन करें!”

“प्रकृति को उपभोग की वस्तु नहीं, उपासना का विषय मानें!”

निष्कर्ष:

विश्व पर्यावरण दिवस हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हम आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ, सुरक्षित और सुंदर पृथ्वी दे पाएंगे? यदि हाँ, तो हमें आज ही संकल्प लेना होगा, छोटे प्रयासों से बड़ा परिवर्तन लाना है।

“प्रकृति के साथ मिलकर ही,
भविष्य की राह बनानी है।”

टीचर्स ऑफ़ बिहार (द चेंज मेकर्स)
द्वारा निर्गत ई-पत्रिका

हमसे जुड़ें-

ईमेल: writers.teachersofbihar@gmail.com
व्हाट्सएप चैनल : https://whatsapp.com/channel/0029Va9AFpI65yD3brB8SI17
वेबसाइट : https://gadyagunjan.teachersofbihar.org

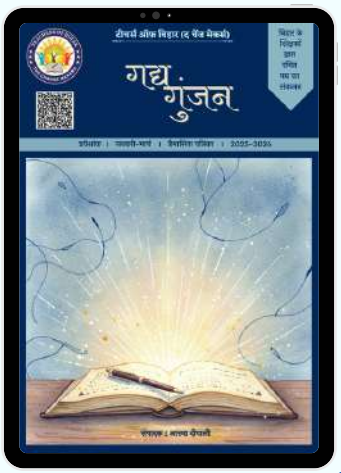

पिछला अंक पढ़ें-

https://www.teachersofbihar.org/gadyagunjan/jan-march-2025-1